Quadrant II – Transcript and Related Materials

Programme: Bachelor of Arts (T.Y.B.A)

Subject: Hindi

Paper Code: HNC 108

Paper Title: 'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी गद्य'

Unit: Unit 2

Module Name: 'स्वातंत्र्योत्तर प्रमुख हिंदी कहानीकार-1

(मोहन राकेश, कमलेश्वर, राजेंद्र यादव)

Module No: 07

Name of the Presenter: Ms. Magdalene D'souza

Script:

नमस्कार, मैं मग्डालीन डीसूजा आज आपके सामने तृतीय वर्ष के पाठ्यक्रम 'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी गद्य' से नई कहानी के प्रमुख रचनाकार मोहन राकेश, कमलेश्वर, राजेंद्र यादव के जीवन तथा साहित्य पर विचार प्रस्तुत करने जा रही हूँ ।

सबसे पहले मोहन राकेश

मोहन राकेश

इनका जन्म 2 जनवरी 1935 को हुआ, नई कहानी आंदोलन के सशक्त हस्ताक्षर थे। उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से हिन्दी और अँग्रेजी में एम.ए किया। कुछ वर्ष तक वे सारिका के संपादक रहें। संगीत, नाटक अकादमी से सम्मानित थे । वे हिन्दी के बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न नाटककार , लेखक और कथाकार रहें। 'मोहन राकेश की डायरी' हिन्दी में इस विधा की सबसे सुंदर कृतियों में एक मानी जाती है।

उनकी मुख्य कृतियाँ हैं- उपन्यास में : अंधेरे बंद कमरे, अंतराल, न आनेवाला कल,

नाटक में : आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस, आधे अधूरे, अंडे के छिलके।

उनके कहानी संग्रह हैं- क्वार्टर तथा अन्य कहानियाँ, पहचान तथा अन्य कहानियाँ, वारिस तथा अन्य कहानियाँ।

निबंध संग्रह: परिवेश

मोहन राकेश ने अनुवाद में भी अपनी कलम चलायी है जिसमें मृछकटिक, शाकुंतलम् गिने जाते हैं। और यात्रा वृत्तांत में : आखरी चट्टान ।

मोहन राकेश के साहित्य की विशेषताएँ कुछ इस प्रकार हैं-

मोहन राकेश के कथा साहित्य की बात करें तो उनकी साहित्य में मध्यवर्गीय जीवन की त्रासदी प्रमुख रूप से दिखाई देती है। साथ ही विभाजन की त्रासदी, बदलते आधुनिक जीवन शैली के कारण सम्बन्धों में विघटन की स्थिति, मध्यवर्गीय परिवार की दमित इच्छाओ कुंठाओ व विसंगतियो को भी दर्शाया है ।

कमलेश्वर-

कमलेश्वर का जन्म 6 फरवरी 1932 को हुआ । हिन्दी के 20 वी शती के सबसे सशक्त लेखकों में से एक समझे जाते हैं ।

कमलेश्वर ने 1954 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में एम. ए किया । कहानी, उपन्यास, पत्रकारिता, स्तम्भ लेखन, फिल्म पटकथा सी अनेक विधाओं में उन्होंने अपनी लेखन प्रतिभा का परिचय दिया है । इनका लेखन गंभीर साहित्य से ही जुड़ा रहा । उन्होंने फिल्मों के लिए पटकथाएँ लिखी । उनके उपन्यासों पर फिल्मे बनी । जैसे- आँधी: मौसम (फिल्म), सारा आकाश, राजनीगंधा, छोटी सी बात, मि. नटवरलाल, सौतन, और लैला ।

टी.वी: चंद्रकांता के अलावा दर्पण, और 'एक कहानी' की पटकथा लिखने वाले कमलेश्वर ही थे । उन्होंने कई कार्यक्रमों का निर्देशन भी किया ।

1995 में कमलेश्वर को पद्म भूषण से नवाजा गया और 2003 में उन्हें 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उन्होंने पटकथा के अलावा उपन्यास और कहानियाँ भी लिखी है ।

उपन्यास में': एक सड़क सत्तावन गलियाँ, तीसरा आदमी, डाक बंगला, समुद्र में खोया हुआ आदमी, काली आँधी, आगामी, अतीत, सुबह, दोपहर और शाम, रेगिस्तान लौटे हुए मुसाफिर, वही बात, एक और चंद्रकांता, कितने पाकिस्तान, अंतिम संकट ।

कहानी संग्रह जैसे राजा निरबंसिया, मास का दरिया, नीली झील, तलाश, बयान, नागमणि, अपना एकांत, आसक्ति, ज़िंदा मुर्दे, जॉर्ज पंचम की नाक, मुद्दों की दुनिया, कस्बे का आदमी, स्मारक ।

उन्होंने पटकथा के लिए संवाद संवाद भी लिखे हैं : सौतन की बेटी, संवाद, लैला

अब हम कमलेश्वर के कहानी साहित्य की विशेषताओं की संक्षेप में चर्चा करेंगे

कमलेश्वर की रचनाओं में तेजी से बदलते समाज का बहुत ही मार्मिक और संवेदनशील चित्रण दृष्टिगोचर होता है। वर्तमान की महानगरीय सभ्यता में मनुष्य के अकेलेपन की व्यथा और उसका चित्रांकन कमलेश्वर की रचनाओं की विशेषता रही है।

अगले कथाकार है राजेंद्र यादव

राजेंद्र यादव जन्म 28 अगस्त 1929 ई आगरा में हुआ । इनके माता पिता श्री एम. एल यादव और श्रीमती ताराबाई थी । इनकी प्रथम कहानी प्रतिहिंसा, कर्मयोगी पत्रिका सन 1947 ई .में प्रकाशित हुई । राजेंद्र यादव का प्रथम उपन्यास 'प्रेत बोलते हैं 1951 ई. में प्रकाशित हुआ और यही उपन्यास बाद में 'सारा आकाश' नाम से 1959 में प्रकाशित हुआ ।

आगे चलकर उन्होंने हंस पत्रिका का कार्य भार सँभाला और मरते दम तक इस पत्रिका का दायित्व निभाया । साथ-साथ कई नवीन लेखकों को जन्म दिया ।

इनके कुछ उपन्यास है 'प्रेत बोलते हैं', 'उखड़े हुए लोग', 'कुलटा', 'शह और मात', 'सारा आकाश', 'अनदेखे अनजाने पुल', 'एक इंच मुस्कान', 'मंत्र विद्ध और कुल्ता', 'एक था शैलेंद्र'।

कहानी साहित्य में - रेखाएँ, लहरें और परछाईयाँ, देवताओं की मूर्तियाँ, खेल-खिलौना, जहां लक्ष्मी कैद है, अभिमन्यु की आत्महत्या, छोटे-छोटे ताजमहल, किनारे से किनारे तक, टूटना आदि ।

उन्होंने समीक्षा-निबंध भी लिखे हैं जिसमें- प्रेमचंद की विरासत,औरों के बहाने, कांटे की बात, मेरे साक्षात्कार, वे देवता नहीं है आदि ।

उन्होंने आत्मकथन, कविता संग्रह एवं नाटक भी रचे ।

नाटकों में : अधूरी आवाज़, रेत पर लिखे नाम, हिंदोस्ता हमारा

राजेंद्र यादव के कहानी साहित्य की विशेषताएँ कुछ इस प्रकार हैं ।

राजेंद्र यादव की कहानियों में 'ह्यूमन कंसर्न' की बात मौजूद है । वह कभी एक व्यक्ति या कम व्यक्तियों के सवालों और समस्याओं के रूप में व्यक्त हुआ है, तो कभी उसकी ज़मीन विस्तृत और फैली हुयी है । यादव की परवर्ती कहानियां सम्बन्धों के बदलने, टूटने और बनने की प्रक्रिया को मनोवैज्ञानिक परिपार्श्व में देखती हैं। वे विस्तार से दिखाते हैं कि किस तरह 'मानवता' 'संस्कृति' 'नैतिकता' जैसे शब्द सामान्य मनुष्य से पृथक होकर हवाई गुब्बारे मात्र बनकर रह गए हैं।